Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुज़्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **30.10.15** जर्मनी।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वृत्तांत तथा आपके द्वारा, आपने कुछ घटनाएँ बयान फ़रमाई उनको हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने अपने विभिन्न भाषणों में बयान किया है। उनको मैं आज बयान करूंगा विविध स्थानों से लेकर। प्रत्येक घटना या वृत्तांत अलग अलग अपने अन्दर एक उपदेश रखता है। इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कि जमाअत के लोगों को अपने ज्ञान में वृद्धि करनी चाहिए, दीन का ज्ञान रखने वाले भी, वर्तमान परिस्थितयों से अवगत रहें तथा इतिहास की भी जानकारी रखें, विशेष रूप से मुरब्बी हैं, मुबल्लिग़ हैं। इनको चाहिए कि विशेष रूप से ध्यान दें। आजकल की दुनिया में तो ये जानकारियाँ तुरन्त बड़ी सरलता पूर्वक उपलब्ध हो जाती हैं। अतः एक घटना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने बयान फ़रमाई है जो ज्ञान की क्षमता बढ़ाने की ओर ध्यान आकर्षण करती है। आप फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति था जो बड़ा बुज़ुर्ग कहलाता था। संयोगवश किसी राजा का मन्त्री उसका श्रद्धालु बन गया यहाँ तक उसने राजा को भी प्रेरणा दी और कहा कि आप अवश्य उनके दर्शन करें। आप (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी.) लिखते हैं कि पता नहीं कि वह बुज़ुर्ग था कि नहीं, परन्तु आगे जो बातें आ रहीं हैं उनसे ज्ञात होता है कि वह मूर्ख अवश्य था। जब राजा उससे मिलने के लिए आया तो वह बुज़ुर्ग उससे कहने लगा, राजा जी आपको न्याय करना चाहिए, देखिए मुसलमानों में से जो सिकंदर नामक राजा हुआ है, वह कितना न्याय प्रिय तथा इंसाफ़ करने वाला था कि आज तक उसकी कैसी ज़्याति है। जब कि सिकंदर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से सैंकड़ों वर्ष पूर्व बल्कि हज़रत ईसा अलै. से भी पहले हो चुका था परन्तु उसने सिकंदर को रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद का राजा बताकर उसे मुसलमानों का राजा कह दिया। परिणाम यह हुआ कि राजा पर प्रभाव तो क्या डालना था उसने, राजा उससे से अप्रसन्न हो गया और तुरन्त उठ कर चला आया। तो हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि इतिहासकारी, बुज़ुर्गी के लिए आवश्यक नहीं परन्तु यह कठिनाई तो इस स्वयं-भू बुज़ुर्ग ने अपने ऊपर स्वयं डाली है। जब इंसान सत्य-पथ से हठकर तथाकथित बुज़ुर्गी तथा ज्ञान का चोला पहने अथवा इसको पहनने का प्रयास करता है तो फिर इसी प्रकार निरादर होता है, यही परिणाम होता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फ़रमाया कि लोगों को बड़ी जल्दी होती है अभिशाप देने की किसी को। हमारा यह नियम होना चाहिए कि हम किसी के लिए बद्दुआ न करें बल्कि हमें अपने विरोधियों के लिए दुआ करनी चाहिए, अन्ततः उन्होंने ही ईमान लाना है। मौलवी अब्दुल करीम साहब फ़रमाया करते थे कि मैं चौबारे में रहता था, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मकान के नीचे वाले भाग में थे कि एक रात नीच से मुझे इस प्रकार की रोने की आवाज़ जैसे कोई स्त्री बच्चा पैदा होने की पीड़ा के कारण चिल्लाती हो। मुझे आश्चर्य हुआ और मैंने कान लगाकर आवाज़ को सुना तो पता चला कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. दुआ कर रहे हैं तथा आप कह रहे हैं कि ऐ ख़ुदा, ताऊन (प्लेग) पड़ी हुई है तथा लोग इसके कारण मर रहे हैं। ऐ ख़ुदा, यदि ये सब लोग मर गए तो तुझ पर ईमान कौन लाएगा। अब देखो ताऊन (प्लेग) वह निशान था जिसकी रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूचना दी थी। ताऊन के निशान का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्य वाणियों से भी चलता है। परन्तु जब ताऊन आती है तो वही व्यक्ति जिसकी सत्यता को प्रमाणित करने के लिए ताऊन आती है ख़ुदा तआला के सामने गिड़गिड़ाता है और कहता है कि कि ऐ अल्लाह, यदि ये लोग मर गए तो तुझ पर ईमान कौन लाएगा। अतः मोमिन को सामान्य लोगों के लिए बद्दुआ नहीं करनी चाहिए।

फ़रमाते हैं, अतः जिन लोगों को उच्च स्तर तक पहुंचाने के लिए हमें खड़ा किया गया है उनके लिए हम बद्दुआ कैसे कर सकते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि-

ऐ दिल तू नीज़ ख़ातिरे ईनाँ निगाहदार काख़िर कुनन्द दावऐ हुब्बे पयज़्बरी

कि ऐ मेरे दिल, तू इन लोगों की विचार धारा, भावनाओं का ध्यान रखा कर ताकि उनके दिल मैले न हों, यह न हो कि तंग आकर बद्दुआ करने लग जाए। अर्थात अपने आपको कह रहे हैं, आख़िर उनको तेरे रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

से प्रेम है तथा इसी मुहब्बत के कारण ये तुझ्हें गालियाँ देते हैं। अतः साधारण लोग तो अज्ञानी हैं उनको मौलवी जो पढ़ाते हैं वे आगे इसको अभिव्यक्त कर देते हैं। अतः हमारी दुआ यह होनी चाहिए कि अल्लाह तआला उम्मत को बुरे आलिमों तथा बुरे लीडरों से बचाए और साधारण लोगों को सत्य मार्ग पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। फिर इस बात को बयान करते हुए कि वास्तविक मुलसमान के भाग्य में यह है कि विपत्तियाँ उत्पन्न हों तो अल्लाह तआला उसके लिए सरलता के सामान पैदा फ़रमाता है अथवा आप फ़रमाते हैं, हज़रत मौलाना रूम की पंक्तियाँ हैं कि-

हर बला कीं ईं क़ौम रा ऊदादह अस्त ज़ैरे आँ यकगंज हा बिनहादा अस्त

अर्थात उस ख़ुदा ने क़ौम पर जो भी विपत्ति डाली उसके नीचे उसने एक बड़ा कोष रक्खा है। आप फ़रमाते हैं कि इसको सदैव हज़रत मसीह मौऊद अलै. भी फ़रमाया करते थे कि यदि कोई क़ौम अथवा जमाअत वास्तव में मुसलमान बन जाए तो उसके समस्त कठिनाईयों एंव भय जिनमें वह घिरी हो उसके लिए मुक्ति एंव प्रगति का कारण बन जाते हैं और यह बड़ा वैभव स्तर है सत्य को परखने का, कठिनाईयों के पश्चात सुख आते हैं, अहमदिया जमाअत का इतिहास इस पर साक्षी है कि प्रत्येक परीक्षा हमारे लिए हमारे अल्लाह तआला की कृपा से प्रगति के सामान लेकर आती है।

फिर इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि बुरे विचारों का प्रभाव बिना प्रत्यक्ष साधनों के केवल संगत से भी हो जाता है। कोई किसी को किसी बुराई में पड़ने की प्रेरणा या न दे। यदि किसी बुरी संगति में इंसान समय व्यतीत कर रहा हो तो वह बुराई बिना इच्छा के ही उसके भीतर पैदा हो जाती है। बुरे इंसान का प्रभाव बिना इच्छा के ही उस हो रहा होता है। इस बात को बयान फ़रमाते हुए आप बयान फ़रमाते हैं कि एक बार एक सिक्ख विद्यार्थी ने जो सरकारी स्कूल में पढ़ता था हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से श्रद्धा का सम्बंध रखता था, हज़रत साहब को कहला भेजा कि पहले मुझे ख़ुदा पर विश्वास था परन्तु अब मेरे मन उसके विषय में शंका होने लगी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे कहला भेजा कि तुम कॉलिज में बैठते हो जिस सीट पर, उस जगह को बदल लो। अतः उसने स्थान बदल लिया। फिर बताया कि अब ख़ुदा तआला के विषय में कोई शंका नहीं होती। आपने फ़रमाया कि उस पर एक व्यक्ति का प्रभाव पड़ रहा था जो उसके पास बैठता था और वह नास्तिक था, जब जगह बदली तो उसका प्रभाव पड़ना बन्द हो गया और शंकाएँ भी न रहीं। इसी प्रकार टी वी प्रोग्राम हैं, इस विषय में बड़ों को भी याद रखना चाहिए कि वे बच्चों को तो प्रोग्राम देखने से रोकते हैं। वे यदि बच्चों को इस प्रकार के प्राग्राम न भी देखने दें जो बच्चों के आचरण पर बुरा प्रभाव डालते हैं अतः माता-पिता का भी कर्तव्य यह है कि अपने घर के वातावरण को शुद्ध एंव पवित्र रखें, क्यूँकि अनैच्छिक रूप से बच्चों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है और तर्बियत पर प्रज्ञाव पड़ता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. एक स्थान पर बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुछ लोगों को कह दिया करते थे कि दुआ के लिए सम्बंधों की आवश्यकता होती है, तुम एक उपहार तय करो, मैं दुआ करूंगा। यह युक्ति इस कारण से करते थे कि सम्बंध बढ़े। इसके लिए हज़रत साहब ने एक बार एक कथा सुनाई कि एक बुजुर्ग से कोई व्यक्ति दुआ कराने गया, उसके मकान का प्रपत्र खो गया था। उसने कहा कि मैं दुआ करूंगा पहले मेरे लिए हलवा लाओ और जब उसने हलवा लिया और हलवाई उसको एक काग़ज़ पर डालकर देने लगा, जो काग़ज़ पड़ा हुआ था हलवाई के पास, तो उसने शोर मचा दिया कि इसको न फाड़ना, यही तो मेरे मकान के काग़ज़ हैं, इसके लिए तो मैं दुआ कराना चाहता था। तो इस प्रकार की अनेक घटनाएँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा हमें मिलती हैं। नेकियों में एक दूसरे से आगे बढ़ने का उपदेश देते हुए एक बार आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा लिखित बयान किया है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सहाबियों के विषय में सुनाया करते थे।

एक सहाबी बाज़ार में घोड़ा बेचने के लिए लाया, दूसरे ने उससे मूल्य पूछा, उसने कुछ बताया। परन्तु क्रय करने वाले ने कहा कि नहीं इसका मूल्य इतना है और जो उसने बताया वह बेचने वाले के द्वारा बताए हुए मूल्य से अधिक था। तो आप फ़रमाते हैं कि यह स्तर न्याय का, ईमानदाार की यह तो एक छोटी सी घटना है। तो जहाँ यह बात हमारी अपनी तर्बियत के लिए, अपने प्रतिफल पहुंचाने लिए लाभदायक होगी, हमारी पीढ़ियों की दीक्षा करने वाली भी होगी तथा इसके साथ ही जमाअत की प्रगति का भी कारण बनेगी। अतः ये स्तर हैं जो हमें स्थापित रखने का प्रयास करना चाहिए।

फिर एक अन्य विशेष बात है जिसकी ओर प्रत्येक अहमदी को ध्यान देना चाहिए। यह है कि सदैव याद रखें कि समस्त प्रशंसाओं की स्वामी केवल अल्लाह तआला की ज़ात है। इसी प्रकार किसी को हिदायत देना भी अल्लाह तआला का काम है। अल्लाह तआला ने हमारे ज़िम्मे एक काम काम किया है कि हिदायत का प्रचार करो, पैग़ाम पहुंचाओ परन्तु हिदायत देना ख़ुदा तआला का काम है। जितना सम्भव हो हमें पूरी क्षमता के साथ यह काम करना चाहिए तथा परिणाम फिर स्वयं अल्लाह तआला प्रदान करता है। कभी यह विचार नहीं करना चाहिए कि यदि अमुक व्यक्ति हिदायत पा जाए और अहमदी हो जाए तो जमाअत

उन्नति करेगी। अतः हमारा ध्यान अल्लाह तआला की कृपाओं की प्राप्ति की ओर होना चाहिए, हमारी निर्भरता अल्लाह तआला पर होनी चाहिए तथा जो काम हमने करना है, करना चाहिए इसको, न कि लोगों पर हम दृष्टि रक्खें। इस लिए यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला इस प्रकार के लोग जमाअत को प्रदान करे जो निष्ठा एंव श्रद्धा में बढ़ने वाले हों तथा दीन की प्रगति में आगे क़दम बढ़ाने हों।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इंसानियत को पथ-भ्रष्टता से बचाने के लिए कितना दर्द था इसका एक उदाहरण देते हुए हज़रत मुस्ले मौऊद रज़ी. एक वृत्तांत बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक निरक्षर तथा तुच्छ महिला आई और कहने लगी कि हुज़ूर मेरा बेटा ईसाई हो गया, आप दुआ करें कि वह मुसलमान हो जाए। आपने फ़रमाया, तुम उसे मेरे पास भेजा करो ताकि वह ख़ुदा तआला की बातें सुना करे। वह बीमार था, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के पास इलाज के लिए आया हुआ था। उस लड़के को सिल अर्थात टी बी की बीमारी थी। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब वह आपके पास आत तो वे उसे नसीहत करते रहे तथा इस्लाम की बातें समझाते रहे। अतः ख़ुदा तआला ने उस महिला की विनती स्वीकार कर ली और वह लड़का मुसलमान हो गया और इस्लाम लाने के कुछ दिनो के पश्चात बेचारा मर भी गया। उस महिला को भी यह पता था कि यदि दीन में वापस लाने के लिए कोई अन्तिम युक्ति हो सकती है, मानव युक्ति, तो वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही हैं क्यूंकि उन्हीं में वास्तविक चिंता है इस्लाम की और वही वास्तविक दर्द के साथ पैग़ाम भी पहुंचा सकते हैं, तबलीग़ भी कर सकते हैं, निरुत्तर भी कर सकते हैं। एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सुधार के मार्ग का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं। हज़रत साहब की तर्बियत का ढंग बड़ी सुन्दर एंव आश्चर्य पूर्ण था। आपके पास एक व्यक्ति आया उसके पास संसाधनों की कमी थी। वह बातों बातों यह बयान करने लगा कि इस कमी के कारण कि रेलवे टिकट में इस छूट के साथ आया हूँ और वह छूट सम्भवतः कुछ अनुचित थी। आपने एक रुपया उसको दे दिया और मुस्कुराते हुए फ़रमाया, उस ज़माने में एक रुपए का बड़ा मूल्य था, कि आशा है जाते हुए तुम्हें ऐसा करने की आवश्यकता नहीं होगी। उसको यह समझा भी दिया कि जो उचित काम है उसे सदा करना चाहिए। फिर जमाअत के लोगों को हुनर सीखने तथा परिश्रम करने की ओर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने बड़ा ध्यान दिलाया है। एक घटना बयान करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने का एक लड़का था जिसका नाम फ़ज्जा था। एब बार कुछ मेहमान आए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनके लिए चाय तैय्यार कराई और फ़ज्जे को कहा, यह जो साहब थे, कि उन मेहमानों को चाय पिलाएँ और अन्य एक सेवक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का था, चिराग़, उनको आपने साथ कर दिया और जब दोनों ये चाय लेकर गए, वह तो चिराग़ तो पुराना सेवक था उसने पहले चाय की प्याली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की बुज़ुर्गी तथा आदर सत्कार का ध्यान था, इस लिए उनके सामने रक्खी लेकिन फ़ज्जे साहब ने हाथ पकड़ लिया और कहा कि हज़रत साहब ने केवल पाँच के नाम लिए थे इनका नाम नहीं लिया था। इस प्रकार हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं, इतनी थी बुद्धि उनमें कि इतनी बात भी नहीं समझ सकते थे। वे शीघ्र ही जब राज मिस्त्री के साथ लगाए गए तो जल्दी ही राज मिस्त्री बन गए। अतः इस ओर ध्यान दिलाते हैं हज़रत मुस्लेह मौऊद कि यदि लोग तनिक भी ध्यान दें जो निठल्ले बैठे रहते हैं, कुछ अन्य देशों में निर्धन देशों में भी और यहाँ भी आकर कुछ लोग बैठे रहते हैं तो कोई न कोई विद्या और काम सीख लेते हैं और रुपया कमा सकते हैं। बल्कि मानव सेवा के कामों में, जनता के सेवक बनकर अपना योगदान दे सकते हैं।

ख़ुदा तआला के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्वाभिमान का वर्णन करते हुए एक वृत्तांत बयान फ़रमाते हैं। कहते हैं कि यहाँ एक व्यक्ति था बाद में वे बड़े निष्ठावान अहमदी हो गए और हज़रत साहब के साथ उनका घनिष्ट सम्बंध था परन्तु अहमदी होने से पहले हज़रत साहब उनसे बीस साल तक नाराज़ रहे। कारण यह कि हज़रत साहब को उनकी एक बात से घोर कुंठा हो गई और वह इस प्रकार कि उनका एक बेटा मर गया, फ़ौत हो गया। हज़रत साहब अपने भाई के साथ उनके यहाँ खेद प्रकट करने गए तो उन्होंने हज़रत साहब के बड़े भाई से गले मिलकर रोते हुए कहा कि ख़ुदा ने मुझ पर बड़ा अत्याचार किया है। नऊज़ु बिल्लाह। यह सुनकर हज़रत साहब को ऐसी घृणा हो गई कि उसकी शकल भी देखना नहीं चाहते थे। बाद में ख़ुदा तआला ने उस व्यक्ति को समार्थ्य प्रदान किया और वे इन अंधकारों से निकल आए और अहमदियत स्वीकार कर ली। हज़रत मुस्ले मौऊद फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की हस्ती के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक घटना सुनाया करते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत मीर मुहम्मद इसमाईल साहब के साथ एक नास्तिक पढ़ा करता था। एक बार भूचाल जो आया तो उसके मुंह से सहसा राम राम निकल गया। पहले हिन्दू था, नास्तिक हो गया। तो मीर साहब ने जब उससे पूछा कि तुम तो ख़ुदा के इंकार करने वाले हो तो फिर तुमने राम राम क्यूँ कहा? कहने लगा, ग़ल्ती हो गई यूँ ही मुंह से निकल गया। अतः ख़ुदा तआला की हस्ती की यह बहुत बड़ी दलील है कि प्रत्येक क़ौम में यह विचार धारा पाई जाती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ ख़ुदा तआला का समर्थन तथा सहायता पर आप अलैहिस्सलाम के दिल की हालत का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्ले मौऊद रज़ी. एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस दशा का अनुमान इस नोट से लगाया जा सकता है जो आपने अपनी एक निजि नोट-बुक में लिखा है। इन पंक्तियों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला को सम्बोधित करते हुए फ़रमाते हैं कि ऐ ख़ुदा, मैं तुझे किस प्रकार छोड़ दूँ जबकि समस्त दोस्त तथा मित्र मुझे कोई दुःख नहीं दे सकते, उस समय तू मुझे संतुष्टि प्रदान करता तथा मेरी सहायता करता। इस भावार्थ यह है कि प्रत्येक अहमदी का स्तर अत्यधिक उच्च श्रेणी का होना चाहिए। इस बात का उपदेश हज़रत मुस्लेह मौऊद ने बार बार फ़रमाया है। इस बारे में आपका अपना नमूना क्या था और विरोधियों से भी आप कितना सुन्दर व्यवहार फ़रमाया करते थे। इसका वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि एक दोस्त ने सुनाया कि एक बार हिन्दुओं में से एक व्यक्ति जो कि बड़ा विरोधी था उसकी पत्नि बीमार हो गई। वैद्य ने उसके लिए जो दवाएँ लिखीं उनमें मुश्क भी पड़ता था। जब कहीं और से उसे कस्तूरी न मिली तो वह लज्जित होता हुआ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास आया और आकर निवेदन किया कि आपके पास मुश्क हो तो दे दें। सम्भवतः उसे एक या दो रत्ती मुश्क की आवश्यकता थी। परन्तु उसका अपना बयान है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मुश्क की शीशी भर कर ले आए और फ़रमाया आपकी पत्नि को बड़ी कठिनाई है, यह सब ले जाएँ।

उत्तेजना से बचने के लिए क्या शिक्षा है? हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि ताऊन, तअन शब्द से निकला है और तअन का अर्थ भाला मारना है। अतः वही ख़ुदा जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में आपके दुश्मनों के लिए प्रतापी रंग दिखाया, वही अब भी मौजूद है तथा अब भी अवश्य अपनी शक्तियों का प्रताप दिखाएगा और कदापि चुप नहीं रहेगा। हम चुप रहेंगे तथा जमाअत को उपदेश देंगे कि अपने क्रोध को अंकुश में रक्खें तथा दुनिया को दिखा दें कि एक ऐसी जमाअत भी दुनिया में हो सकती है जो समस्त प्रकार की भड़काऊ बातों को देख और सुनकर शांति पूर्वक रहती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि यदि कोई व्यक्ति यह समझे कि दुआ में करुणा उत्पन्न नहीं होती तो वह बनावटी तौर पर रोने का प्रयास करे जिसके कारण वास्तविक करुणा पैदा हो जाएगी, आप आगे फ़रमाते हैं कि कुछ कामों में हमारी असफलताएँ तथा दुश्मनों में इस प्रकार घिरे रहना केवल इस लिए है कि हमारी जमाअत का एक भाग दुआ में सुस्ती करता है (हुज़ूर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि आज भी यही वास्तविकता है) और अनेक ऐसे हैं जो दुआ करना भी नहीं जानते। फ़रमाया- दुआ मौत स्वीकार कर लेने का दूसरा नाम है। अतः दुआ का अर्थ यह है कि इंसान अपने ऊपर एक प्रकार की मौत तारी करता है क्यूँकि जो व्यक्ति जानता है कि मैं यह काम कर सकता हूँ वह कब किसी को सहायता के लिए पुकारता है। इसी प्रकार ख़ुदा तआला से भी वही व्यक्ति मांग सकता है जो उसके सामने अपने आपको मरा हुआ समझे तथा उसके सम्मुख अपने आपको पूर्ण रूप से असहाय समझे। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि इंसान मेरे मार्ग में जब तक मर न जाए उस समय तक दुआ, दुआ न होगी। दुआ उसी की दुआ कहलाने के योग्य होगी जो अपने ऊपर एक मौत तारी करता है तथा स्वयं को एक तुच्छ समझता है। जो मनुष्य यह हालत पैदा करे वही ख़ुदा के सम्मुख सफल तथा उसी की दुआएँ स्वीकार्य हो सकती हैं।

अल्लाह तआला हमें सामर्थ्य प्रदान करे कि हम अपने भीतर सद्गुणों के उच्च स्तर स्थापित करें तथा इबादतों के भी उच्च स्तर स्थापित करने वाले हों और ख़ुदा तआला हमें स्वीकृत दुआओं की भी तौफ़ीक़ प्रदान करे तथा इसका हक़ अदा करने वाला बनाए।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 30.10.2015

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*